॥ श्रीहरिः ॥

कल्याण

वेद-कथाङ्क

तिहत्तरवें वर्षका विशेषाङ्क

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

विषय-सूची

विषय — पृष्ठ-संख्या

१-वेदतत्त्व ॐकार-स्वरूप भगवान् विष्णु १

मङ्गलाचरण—

२-श्रीगणपति-स्तवन २

३-स्वस्ति-वाचन ३

४-कल्याण-सूक्त ४

५-मङ्गल-चतुष्टय ५

६-परम पुरुष (श्रीविष्णु)-स्तवन ५

७-वैदिक शुभाशंसा ७

८-वैदिक बाल-विनय ८

९-वैदिकस्थानमनुयोग— .... ९—१२

(१) आदर्श वैदिक शिक्षा ९

(२) वेदोक्त मानव-प्रार्थना १०

(३) वेदसे कामना-साधन ११

(४) वेदोंमें भगवत्कृपा-प्राप्त्यर्थ प्रार्थना १२

१०-राष्ट्र-कल्याणका माङ्गलिक संदेश १३

११-वेद-कथाका वैशिष्ट्य—एक परिचय (राधेश्याम खेमका) १४

प्रसाद—

१२-मन्त्रद्रष्टा आचार्य वसिष्ठ २१

१३-वैदिक सभ्यताके प्रवर्तक मनु २५

१४-वेद और वेदव्यास (डॉ० श्रीवेदप्रकाशजी शास्त्री, एम० ए०, पी-एच० डी०) २६

१५-महर्षि वाल्मीकि एवं उनके रामायणपर वेदोंका प्रभाव २९

१६-भगवान् आदि शंकराचार्य और वैदिक साहित्य ३२

१७-नानापुराणनिगमागमसम्मतं यत् (डॉ० श्रीओउम्प्रकाशजी द्विवेदी) ३३

१८-वेद अनादि एवं नित्य हैं (ब्रह्मलीन धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज) [प्रेषक—प्रो० श्रीबिहारीलालजी टाँटिया] ३८

१९-वेदकी उपादेयता (ब्रह्मलीन जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज) ४०

२०-वेदकृत वामनरूपधारी विष्णुका स्तवन ४१

२१-वेद ही सदाचारके मुख्य निर्णायक (शृङ्गेरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य ब्रह्मलीन स्वामी श्रीश्रीअभिनवविद्यातीर्थजी महाराज) ४२

२२-वेदका अर्थदर्शन (ब्रह्मलीन स्वामी श्रीअखण्डानन्द सरस्वतीजी महाराज) ४३

२३-'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' (ब्रह्मलीन योगिराज श्रीदेवराहा बाबाजी महाराजकी अमृत-वाणी) [प्रस्तुति— श्रीमदनजी शर्मा शास्त्री, साहित्यालंकार] ४४

२४-श्रीअरविन्दका आध्यात्मिक वेद-भाष्य [श्रीदेवदत्तजी] ४५

२५-वेदान्तकी अन्तिम स्थिति (गोलोकवासी संत पूज्यपाद श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी महाराज) [संकलनकर्ता डॉ० श्रीविद्याधरजी द्विवेदी] ४८

२६-वेदोंकी संहिताओंमें भक्ति-तत्त्व (श्रीमत्परमहंस-परिव्राजकाचार्य दार्शनिक-सार्वभौम विद्यावारिधि न्यायमार्तण्ड वेदान्तवागीश श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ महामण्डलेश्वर पूज्य स्वामी श्रीमहेश्वरानन्दजी महाराज) ५०

२७-तपसा किं न सिध्यति! (वेद-दर्शनाचार्य म० मं० पू० स्वामी श्रीगङ्गेश्वरानन्दजी महाराज) ५४

२८-वेदका अध्ययन (गोलोकवासी महामहोपाध्याय पं० श्रीविद्याधरजी गौड़) ५९

२९-वेदोंमें भेद और अभेद-उपासना (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) ६२

३०-वेदकी ऋचाएँ स्पष्ट करती हैं—'परब्रह्मकी सत्ता' (सर्वपल्ली डॉ० श्रीराधाकृष्णनजी पूर्व-राष्ट्रपति) [प्रस्तुति— पं० श्रीबलरामजी शास्त्री, आचार्य] ६३

३१-वेदोपनिषदोंमें युगल स्वरूप (नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार) ६४

३२-वेदमें गौका जुलूस ६७

विषय	पृष्ठ-संख्या
३३-वेदमें अवतारवाद (महामहोपाध्याय पं० श्रीगिरिधरजी शर्मा चतुर्वेदी)	७८
३४-'वेद' शब्दका तात्पर्यार्थ क्या है ? (शास्त्रार्थ-महारथी (वैकुण्ठवासी) पं० श्रीमाधवाचार्यजी शास्त्री)	७९
३५-गो-स्तवन	८२
आशीर्वाद—	
३६-अपौरुषेय वेदोक्त श्रेयस्कर मार्ग (अनन्त श्रीविभूषित दक्षिणाम्नायस्थ शृंगेरी-शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीभारतीतीर्थजी महाराज)	८३
३७-अथर्ववेदकी महत्ता और उसकी समसामयिकता (अनन्तश्रीविभूषित द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज)	८६
३८-श्रुतियोंमें सृष्टि-संदर्भ (अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिश्चलानन्द सरस्वतीजी महाराज)	९०
३९-शुभाशंसा (अनन्तश्रीविभूषित तमिलनाडुक्षेत्रस्थ काञ्चीकामकोटिपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीजयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज)	९५
४०-वेदोंका परम तात्पर्य परब्रह्ममें संनिहित (अनन्तश्रीविभूषित ऊर्ध्वाम्नाय श्रीकाशीसुमेरुपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीचिन्मयानन्द सरस्वतीजी महाराज)	९५
४१-श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य एवं उनके द्वारा वेद-प्रामाण्य-प्रतिपादन (अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज)	९९
४२-वैदिक धर्म-संस्कारों एवं संस्कृतिका समग्र जन-जीवनपर प्रत्यक्ष प्रभाव (जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीश्यामनारायणाचार्यजी महाराज)	१०१
४३-वेदकी ऋचाओंमें भगवत्तत्त्वदर्शन (अनन्तश्रीविभूषित श्रीमद्विष्णुस्वामिमतानुयायि श्रीगोपाल वैष्णवपीठाधीश्वर श्री १००८ श्रीविट्ठलेशजी महाराज)	१०३
४४-वेद-कथाका माङ्गलिक स्वरूप (श्रीगोरक्षपीठाधीश्वर महन्त श्रीअवेद्यनाथजी महाराज)	१०५
४५-वेद और श्रीमद्भगवद्गीता (श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज)	१०८
४६-महर्षि दध्यङ् आथर्वणकी वैदिकी कथा (पद्मभूषण आचार्य श्रीबलदेवजी उपाध्याय)	११०
४७-सत्संगकी महिमा	११२
वैदिक ऋचाओंमें भगवत्तत्त्व-दर्शन—	
४८-पृथ्वीकी परिक्रमा [आख्यान] (श्रीअमरनाथजी शुक्ल)	११३
४९-वेदोंमें भगवत्कृपा (आचार्य श्रीमुंशीरामजी शर्मा)	११५
५०-धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे [आख्यान]	११८
५१-वेदोंमें भक्तिका स्वरूप (श्रीदीनानाथजी सिद्धान्तालंकार)	१२०
५२-ब्रह्म क्या है ? [आख्यान]	१२२
५३-वैदिक ऋचाओंमें भगवत्तत्त्व-दर्शन (श्रीगङ्गाधरजी गुरु, बी० ए०, एल्-एल्० बी०) [प्रेषक— श्रीरवीन्द्रनाथजी गुरु]	१२३
५४-मैत्रेयीको ज्ञानोपदेश [आख्यान]	१२५
५५-रैक्वका ब्रह्मज्ञान [आख्यान]	१२६
५६-वेद और भारतीयताका उपास्य-उपासक एवं मैत्रीभाव (म० म० पं० श्रीविश्वनाथजी शास्त्री दातार, न्यायकेसरी, नीतिशास्त्रप्रवीण)	१२७
५७-यमके द्वारपर [आख्यान] (श्रीशिवनाथजी दुबे, एम्० कॉम्० एम्० ए०, साहित्यरत्न, धर्मरत्न)	१३०
५८-वेदोंमें शरणागति-महिमा (स्वामी श्रीओंकारानन्दजी सरस्वती)	१३२
५९-शौनक-अङ्गिरा-संवाद [आख्यान]	१३४
६०-वेदोंमें ईश्वर-भक्ति (श्रीराजेन्द्रप्रसादजी सिंह)	१३६
६१-वेदोंमें गो-महिमा	१३७
६२-गो-सेवासे ब्रह्मज्ञान [आख्यान]	१४१
६३-ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना (श्रीअनुरागजी 'कपिध्वज')	१४२

विषय	पृष्ठ-संख्या
वेद-वाङ्मयका परिचय—	
६४-ब्रह्मस्वरूप वेद (पं० श्रीलालबिहारीजी मिश्र)	१४३
६५-अर्चनासे बढ़कर भक्ति नहीं	१४५
६६-वेदवाङ्मय-परिचय एवं अपौरुषेयवाद (दण्डीस्वामी श्रीमद् दत्तयोगेश्वरदेवतीर्थजी महाराज)	१४६
६७-वेदस्वरूप (डॉ० श्रीयुगलकिशोरजी मिश्र)	१५०
६८-वैदिक वाङ्मयका शास्त्रीय स्वरूप (डॉ० श्रीश्रीकिशोरजी मिश्र)	१५७
६९-ऋग्वेदका परिचय एवं वैशिष्ट्य (श्रीराम अधिकारीजी, वेदाचार्य)	१६२
७०-यजुर्वेदका संक्षिप्त परिचय (श्रीऋषिरामजी रेग्मी, अथर्ववेदाचार्य)	१६५
७१-सामवेदका परिचय एवं वैशिष्ट्य [श्रीराम अधिकारीजी, वेदाचार्य]	१७२
७२-सारा परिवार ईश-भक्त हो	१७५
७३-अथर्ववेदका संक्षिप्त परिचय (श्रीऋषिरामजी रेग्मी, अथर्ववेदाचार्य)	१७६
७४-अथर्ववेदीय गोपथ ब्राह्मण—एक परिचय (श्रीऋषिरामजी रेग्मी, अथर्ववेदाचार्य)	१८०
७५-वेदाङ्गोंका परिचय (डॉ० श्रीनरेशजी झा, शास्त्रचूडामणि)	१८२
७६-वैदिक साहित्यका परिचय 'कल्पसूत्र' (पं० श्रीरामगोविन्दजी त्रिवेदी)	१८८
७७-वेदके विविध छन्द और छन्दोऽनुशासन-ग्रन्थ (डॉ० आचार्य श्रीरामकिशोरजी मिश्र)	१९४
७८-वेदोंमें ज्योतिष (श्रीओमप्रकाशजी पालीवाल, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)	१९८
७९-वेद-मन्त्रोंके उच्चारण-प्रकार— प्रकृतिपाठ एवं विकृतिपाठ [डॉ० श्रीश्रीकिशोरजी मिश्र]	१९९
८०-माध्यन्दिनीय यजुर्वेद एवं सामवेदकी पाठ-परम्परा (गोलोकवासी प्रो० डॉ० श्रीगोपालचन्द्रजी मिश्र, भूतपूर्व वेदविभागाध्यक्ष वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय)	२०३

विषय	पृष्ठ-संख्या
वेद-तत्त्व-मीमांसा—	
८१-वेदोंकी नित्यता	२१३
८२-व्युत्पत्ति-मूलक वेद-शब्दार्थ (आचार्य डॉ० श्रीजयमन्तजी मिश्र)	२१५
८३-वैदिक ऋषि, देवता, छन्द और विनियोग (पं० श्रीयोगीन्द्रजी झा, वेद-व्याकरणाचार्य)	२१७
८४-वेद-रहस्य (स्वामी श्रीविज्ञानानन्दजी सरस्वती)	२१९
८५-वेदोंकी रचना किसने की? (शास्त्रार्थ-पञ्चानन पं० श्रीप्रेमाचार्यजी शास्त्री)	२२५
८६-वैदिक धर्म-दर्शनका मूल प्रणव (ॐ) (डॉ० सुश्री आभा रानी)	२२७
८७-भगवान्‌के साक्षात् वाङ्मय-स्वरूप हैं 'वेद' (गोलोकवासी भक्त श्रीरामशरणदासजी पिलखुवा)	२२९
८८-वेदोंका स्वरूप और पारमार्थिक महत्त्व (प्रो० डॉ० श्रीश्याम शर्माजी वाशिष्ठ)	२३०
८९-वेद-महिमा [कविता] (महाकवि डॉ० श्रीयोगेश्वरप्रसादजी सिंह 'योगेश')	२३४
९०-'निगमकल्पतरोर्गलितं फलम्' (डॉ० श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसादजी मिश्र 'विनय')	२३५
९१-श्रीरामचरितमानसमें वेदस्तुति (मानसमराल डॉ० श्रीजगेशनारायणजी 'भोजपुरी')	२४१
९२-सर्वाधाररूपा, कल्याणस्वरूपा वेद-कथा (महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीबजरङ्गबलीजी ब्रह्मचारी)	२४३
९३-वेद-दृष्टि और दृष्टि-निष्ठा (प्रो० श्रीसिद्धेश्वरप्रसादजी, राज्यपाल—त्रिपुरा)	२४६
९४-रूसमें वेदका अध्ययन और अनुसंधान (श्रीउदयनारायण सिंहजी)	२४९
९५-वेदविद्या—विदेशोंमें (डॉ० श्रीराजेन्द्ररंजनजी चतुर्वेदी, डी० लिट्०)	२५२
९६-तुलसी-साहित्य और वेद (श्रीरामपदारथ सिंहजी)	२५४

विषय	पृष्ठ-संख्या
९७-श्रीगुरुग्रन्थ साहिब और वेद (प्रो० श्रीलालमोहरजी उपाध्याय)	२५६
९८-जम्भेश्वरवाणीमें वेद-मीमांसा (आचार्य संत श्रीगोवर्धनरामजी शिक्षा-शास्त्री, व्याकरणाचार्य, एम्० ए०, स्वर्णपदकप्राप्त)	२५८
९९-वेदार्थका उपबृंहण (पं० श्रीजानकीनाथजी कौल 'कमल')	२६०
१००-अनन्ता वै वेदाः (डॉ० श्रीमुकुन्दपतिजी त्रिपाठी 'रत्नमालीय' एम्० ए०, पी-एच्० डी०)	२६३
१०१-वेदोंमें राष्ट्रियताकी उदात्त भावना (डॉ० श्रीमुरारीलाजी द्विवेदी एम्० ए०, पी-एच्० डी०)	२६५
१०२-सभी शास्त्र वेदका ही अनुसरण करते हैं (श्रीश्यामनारायणजी शास्त्री)	२६७
१०३-वैदिक आख्यान, लक्षण और स्वरूप (डॉ० श्रीविद्यानिवासजी मिश्र)	२७०
वेदोंमें शिक्षाप्रद आख्यान—	
१०४-वेद-कथामृत-कुञ्ज (डॉ० श्रीहृदयरंजनजी शर्मा)	२७४
१०५-'ऐतरेय ब्राह्मण' की कथा (पं० श्रीलालबिहारीजी मिश्र)	२७८
१०६-धर्ममें विलम्ब अनुचित	२८०
१०७-गुरुभक्तके देवता भी सहायक	२८१
१०८-ऐतरेय ब्राह्मणकी एक सदाचार-कथा (डॉ० श्रीइन्द्रदेवसिंहजी आर्य, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, साहित्यरत्न, आर० एम्० पी०)	२८४
१०९-महत्ता गुणसे, धनसे नहीं	२८५
११०-नदियोंका अधिदेवत्व (ला० बि० मि०)	२८६
१११-भगवान्‌की असीम दयालुता (ला० बि० मि०)	२८७
११२-असुरोंका भ्रम (श्रीअमरनाथजी शुक्ल)	२८८
११३-निर्मल मनकी प्रसन्नता	२८९
११४-सुकन्याका कन्या-धर्म-पालन (ला० बि० मि०)	२९०
११५-मनुष्य होकर भी देव कौन?	२९१
११६-आपद्धर्म	२९१
११७-अग्नियोंद्वारा उपदेश	२९२
११८-पूज्य सदैव सम्माननीय (श्रीगङ्गेश्वरानन्दजी महाराज)	२९३
११९-संगतिका फल (पद्मभूषण आचार्य श्रीबलदेवजी उपाध्याय)	२९६
वेदोंमें देवता-तत्त्व—	
१२०-वैदिक मन्त्रोंमें देवताका परिज्ञान	३००
१२१-देवता-विचार	३०२
१२२-वैदिक देवता—सत्ता और महत्ता (डॉ० श्रीराजीवजी प्रचण्डिया, एम्० ए० (संस्कृत), बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०, पी-एच्० डी०)	३०५
१२३-श्रीगणेश—वैदिक देवता (याज्ञिकसम्राट् पं० श्रीवेणीरामजी शर्मा गौड, वेदाचार्य)	३०६
१२४-वैदिक देवता 'अग्नि' (डॉ० श्रीकैलाशचन्द्रजी दवे)	३०९
१२५-वैदिक वाङ्मयमें इन्द्रका चरित्र (श्रीप्रशान्तकुमारजी रस्तोगी, एम्० ए०)	३११
१२६-मरुद्गणोंका देवत्व [आख्यान]	३१३
१२७-वेदोंमें भगवान् सूर्यकी महत्ता और स्तुतियाँ (श्रीरामस्वरूपजी शास्त्री 'रसिकेश')	३१४
१२८-वैदिक वाङ्मयमें चन्द्रमा (आचार्य श्रीबलरामजी शास्त्री)	३१६
१२९-वेदोंमें शिव-तत्त्व	३१८
१३०-शुक्लयजुर्वेद-संहितामें रुद्राष्टाधायी एवं रुद्रमाहात्म्यका अवलोकन (शास्त्री श्रीजयन्तीलालजी त्रि० जोषी)	३२२
१३१-महामृत्युञ्जय-जप—प्रकार एवं विधि	३२५
१३२-वेदमें गायत्री-तत्त्व (डॉ० श्रीश्रीनिवासजी शर्मा)	३२७
१३३-शुद्ध-हृदयके रक्षक देव [आख्यान]	३३०

विषय	पृष्ठ-संख्या
वेदोंके प्रमुख प्रतिपाद्य विषय—	
१३४-वैदिक संस्कृति और सदाचार (डॉ० श्रीमुंशीरामजी शर्मा 'सोम', डी० लिट्०)	३३३
१३५-सम-वितरण	३३५
१३६-वैदिक कर्म और ब्रह्मज्ञान (श्रीवसन्तकुमारजी चटर्जी, एम्०ए०)	३३६
१३७-वेदोंमें 'यज्ञ'	३३९
१३८-यज्ञसे देवताओंकी तृप्ति	३४८
१३९-वैदिक शिक्षाव्यवस्था एवं उपनयन (श्रीश्रीकिशोरजी मिश्र)	३४९
१४०-तैत्तिरीय आरण्यकमें विहित वेद-संकीर्तन (श्रीसुब्राय गणेशजी भट्ट)	३५६
१४१-वैदिक वाङ्मयमें पुनर्जन्म (श्रीरामनाथजी 'सुमन')	३५७
१४२-वेदमें योगविद्या (श्रीजगन्नाथजी वेदालंकार) [प्रेषक— श्रीबलरामजी सैनी]	३५९
१४३-वेदोंमें पर्यावरण-रक्षा (डॉ० श्रीरामचरणजी महेन्द्र, एम्० ए०, पी-एच्० डी०)	३६१
१४४-वेदोंमें विमान (डॉ० श्रीबालकृष्णजी एम्० ए०, पी-एच्० डी०, एफ० आर० ई० एस०)	३६५
१४५-गोत्र-प्रवर-महिमा	३६६
१४६-शासनतन्त्र प्रजाके हितके लिये [आख्यान] (ला० बि० मि०)	३६७
१४७-वेदोंमें निर्दिष्ट शुद्धि तथा पवित्रताके साधन (श्रीकैलाशचन्द्रजी दवे)	३६८
ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः—	
१४८-ऋषि-विचार	३७२
१४९-ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः (ऋग्वेद-भाष्यकर्ता पं० श्रीरामगोविन्दजी त्रिवेदी)	३७६
१५०-मन्त्रद्रष्टा ऋषि	३८२—४०५
(१) मन्त्रद्रष्टा महर्षि विश्वामित्र	३८२
(२) महर्षि अत्रि	३८४
(३) महर्षि गृत्समद (डॉ० श्रीबसन्तवल्लभजी भट्ट, एम्० ए०, पी-एच्० डी०)	३८६
(४) महर्षि वामदेव	३८८
(५) महर्षि भरद्वाज (आचार्य श्रीदुर्गाचरणजी शुक्ल)	३९१
(६) महर्षि भृगु	३९३
(७) महर्षि कण्व	३९४
(८) महर्षि याज्ञवल्क्य	३९५
(९) महर्षि अगस्त्य	३९६
(१०) मन्त्रद्रष्टा महर्षि वसिष्ठ	३९७
(११) महर्षि अंगिरा	३९७
(१२) महाशाल महर्षि शौनकका वैदिक वाङ्मयमें विनय एवं स्वाध्यायपूर्ण चारित्र्य (पं० श्रीजानकीनाथजी शर्मा)	३९८
(१३) वैदिक ऋषिकाएँ	४००—४०५
[१] वैदिक ऋषिका देवसम्राज्ञी शची	४००
[२] वाचक्नवी गार्गी	४०२
[३] ब्रह्मवादिनी ममता	४०३
[४] ब्रह्मवादिनी विश्ववारा	४०३
[५] ब्रह्मवादिनी अपाला	४०३
[६] ब्रह्मवादिनी घोषा	४०४
[७] ब्रह्मवादिनी सूर्या	४०४
[८] वैदिक ऋषिका ब्रह्मवादिनी वाक्	४०५
१५१-भाषा और धर्म-भेदसे भेद नहीं	४०५
१५२-भाष्यकार एवं वेद-प्रवर्तक मनीषी	४०६—४२०
(१) वेदार्थ-निर्णयमें यास्ककी भूमिका (विद्यावाचस्पति डॉ० श्रीरंजनसूरिदेवजी)	४०६
(२) महान् सर्ववेदभाष्यकार श्रीसायणाचार्य (डॉ० श्रीभीष्मदत्तजी शर्मा)	४०८
(३) कुछ प्रमुख भाष्यकारोंकी संक्षिप्त जीवनियाँ	४१३
[१] मध्वाचार्य (स्वामी आनन्दतीर्थ)	४१३
[२] उव्वट	४१३
[३] महीधर	४१३
[४] वेङ्कट माधव (विद्यारण्य)	४१३
[५] प्रभाकर भट्ट	४१३
[६] शबरस्वामी	४१३

विषय	पृष्ठ-संख्या
[७] जयंत भट्ट	४१३
[८] मण्डन मिश्र	४१३
[९] भागवताचार्य	४१४
[१०] नारायण	४१४
[११] वाचस्पति मिश्र	४१४
(४) महामहोपाध्याय पं० श्रीविद्याधरजी गौड—काशीकी अप्रतिम वैदिक विभूति	४१५
(५) स्वामी दयानन्द सरस्वती	४१७
(६) अभिनव वेदार्थचिन्तनमें स्वामी करपात्रीजीका योगदान (डॉ० श्रीरूपनारायणजी पाण्डेय)	४१८
वैदिक मन्त्रों एवं सूक्तोंकी लोकोपयोगिता—	
१५३-वेदके सूत्रोंका तात्त्विक रहस्य	४२१
१५४-पञ्चदेवसूक्त	४२२—४३३
(१) श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्	४२२
(२) [क] विष्णु-सूक्त	४२४
[ख] नारायण-सूक्त	४२५
(३) [क] श्री-सूक्त	४२६
[ख] देवी-सूक्त	४२८
(४) रुद्र-सूक्त	४२९
(५) [क] सूर्य-सूक्त	४३१
[ख] सूर्य-सूक्त	४३२
१५५-प्रमुख देवी-देवताओंके सूक्त	४३४—४४२
(१) अग्नि-सूक्त	४३४
(२) इन्द्र-सूक्त	४३५
(३) यम-सूक्त	४३६
(४) पितृ-सूक्त	४३८
(५) पृथ्वी-सूक्त	४३९
(६) गो-सूक्त	४४१
(७) गोष्ठ-सूक्त	४४२
१५६-आध्यात्मिक सूक्त	४४२—४४९
(१) तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु	४४२
(२) सौमनस्य-सूक्त	४४५
(३) संज्ञान-सूक्त	४४६
(४) नासदीय सूक्त	४४६
(५) हिरण्यगर्भ-सूक्त	४४७
(६) ऋत-सूक्त	४४९
(७) श्रद्धा-सूक्त	४४९
१५७-लोकोपयोगी-कल्याणकारी सूक्त	४५०—४५३
(१) दीर्घायुष्य-सूक्त	४५०
(२) धनान्नदान-सूक्त	४५०
(३) कृषि-सूक्त	४५१
(४) गृह-महिमा-सूक्त	४५२
(५) रोगनिवारण-सूक्त	४५३
१५८-वैदिक सूक्तोंकी महत्ताके प्रतिपादक महत्त्वपूर्ण निबन्ध	४५४—४६४
(१) पुरुषसूक्त और श्रीसूक्तका दिव्य दर्शनात्मक संदेश (डॉ० श्रीकेशवरघुनाथजी कान्हेरे)	४५४
(२) वैदिक चिन्तनमें कृषि-चर्चा (डॉ० श्रीविश्वम्भरनाथजी पाण्डेय)	४५६
(३) 'नासदीय-सूक्त'—भारतीय प्रज्ञाका अनन्य अवदान (डॉ० श्रीरामकृष्णजी सराफ़)	४५९
(४) ऋग्वेदका 'कितवसूक्त'—कर्मण्य जीवनका सदुपदेश (डॉ० श्रीदादूरामजी शर्मा)	४६०
(५) ऋग्वेदका 'दानस्तुति-सूक्त' (सुश्री अलकाजी तुलस्यान)	४६२
१५९-वैदिक सूक्ति-सुधा-सिन्धु	४६४—४७२
(१) वेद-वाणी	४६४
(२) वेदामृत-मन्थन	४६७
वैदिक जीवन-दर्शन—	
१६०-वैदिक संहिताओंमें मानव-जीवनका प्रशस्त आदर्श	४७३
१६१-वैदिक गृह्यसूक्तोंमें संस्कारीय सदाचार (डॉ० श्रीसीतारामजी सहगल 'शास्त्री', एम्० ए०, ओ० एल्०, पी-एच्० डी०)	४७९
१६२-परमात्माकी आज्ञामें रहकर कर्म करना चाहिये	४८०
१६३-वेदोंमें गार्हस्थ्य-सूत्र [प्रस्तुति— श्रीनाथूरामजी गुप्त]	४८१

विषय	पृष्ठ-संख्या
१६४-मित्र और शत्रुके साथ ऐकमत्य	४८२
१६५-वैदिक कालमें सात्त्विक आहार (श्रीप्रशान्तकुमारजी रस्तोगी, एम्० ए०)	४८३
१६६-नारी और वेद (पं० श्रीगोपालचन्द्रजी मिश्र, वेदाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य, मीमांसादर्शन-शास्त्री)	४८४
१६७-वैदिक युगीन कृषि-व्यवस्था (प्रो० श्रीमाँगीलालजी मिश्र)	४८५
१६८-वैदिक युगमें राष्ट्रध्वज (श्रीयोगेशचन्द्रजी शर्मा)	४८८
१६९-विवाह-संस्कार अनादि कालसे प्रचलित है (महामहोपाध्याय पं० श्रीविद्याधरजी गौड)	४८९
१७०-वैदिक जीवन-दर्शनके विविध आयाम	४९३—४९७
(१) ब्राह्मणवर्चसकी प्राप्तिके उपाय	४९३
(२) जीवनकी पवित्रता	४९३
(३) पवित्रताके बिना उत्तम बुद्धि, उत्तम कर्म और उन्नत जीवन तथा अहिंसा असम्भव है	४९४
(४) पाप-निराकरणके उपाय	४९४
(५) वैदिक मेधासे दिव्य गुणोंकी रक्षा	४९५
(६) कामना दो प्रकारकी है— भद्र और अभद्र	४९६
(७) संसार-ग्राहसे बचनेका उपाय— संसारमें लिप्त न होना	४९६
(८) मन, वाणी और कर्ममें मधुरता	४९६
(९) चेष्टा, स्वाध्याय और वाणीमें माधुर्य	४९७
(१०) जगत्‌भरके लिये कल्याणेच्छा	४९७
वेदोंमें आध्यात्मिक संदेश—	
१७१-वेदमें आध्यात्मिक संदेश ('मानस-रत्न' संत श्रीसीतारामदासजी)	४९८
१७२-वैदिक सत्य सुख	५००
१७३-वेदमें परलोक	५०२
१७४-'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' (श्रीरामनाथजी 'सुमन')	५०३
१७५-वेदोंमें विद्या-उपासना (महामहोपाध्याय पण्डित श्रीसकलनारायणजी शर्मा)	५०६
१७६-जीवेम शरदः शतम् (पं० श्रीदेवदत्तजी मिश्र, का० व्या० सां० स्मृ० तीर्थ)	५०९
१७७-वैदिक निष्ठा और भूमा (चक्रवर्ती श्रीरामाधीनजी चतुर्वेदी)	५१०
१७८-वेद और आत्मज्ञानकी कुंजी (श्रीअभयदेवजी शर्मा, एम्० ए०, पी-एच्० डी०)	५१२
१७९-आचार्यका दीक्षान्त-उपदेश [प्रेषक— श्रीरघुवीरजी पाठक]	५१४
१८०-नम्र निवेदन और क्षमा-प्रार्थना	५१४